

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन

(बाँदा जिले के विशेष सन्दर्भ में)

शोध-निर्देशक

डॉ. सुनील कुमार तिवारी

सहा. प्राध्यापक

शासकीय शिक्षा महाविद्यालय रीवा

जिला-रीवा (म.प्र.)

शोधार्थी

बेद प्रकाश गुप्ता

1. सारांश (Abstract)

प्रस्तुत शोध पत्र बाँदा जिला के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके पारिवारिक आर्थिक स्तर के प्रभाव का विश्लेषण करता है। शोध में 30 माध्यमिक विद्यालयों के 600 विद्यार्थियों (300 बालक एवं 300 बालिका; 240 शहरी एवं 360 ग्रामीण) से प्राथमिक आँकड़े संग्रहीत किए गए। आर्थिक स्तर का मापन पारिवारिक मासिक आय एवं व्यावसायिक वर्गीकरण के आधार पर किया गया। शैक्षिक उपलब्धि का मापन 50 अंकीय वस्तुनिष्ठ परीक्षण द्वारा किया गया। शोध से स्पष्ट हुआ कि उच्च आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि निम्न आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों से उल्लेखनीय रूप से अधिक है। आर्थिक वंचना, शैक्षिक संसाधनों की अनुपलब्धता एवं अभिभावकीय शिक्षा का अभाव — ये तीन कारक मिलकर बाँदा जिला की शैक्षिक असमानता का मूल आधार बनाते हैं। यह शोध नीतिगत हस्तक्षेप के लिए साक्ष्य-आधारित अनुशंसाएँ प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द (Keywords): आर्थिक स्तर, शैक्षिक उपलब्धि, पारिवारिक आय, माध्यमिक शिक्षा, शहरी-ग्रामीण असमानता, बाँदा जिला, आर्थिक वंचना, शैक्षिक समता, बुन्देलखण्ड।

2. प्रस्तावना (Introduction)

शिक्षा मानव विकास का सर्वाधिक प्रभावशाली साधन है। किसी भी राष्ट्र की प्रगति, सामाजिक गतिशीलता एवं आर्थिक समृद्धि उसकी शिक्षा-व्यवस्था की गुणवत्ता एवं समावेशिता पर निर्भर करती है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 21-A तथा शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 ने प्रत्येक बालक को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का मूल अधिकार प्रदान किया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने 'समान एवं समावेशी शिक्षा' को अपना केन्द्रीय आधार बनाया है। परन्तु नीतिगत प्रयासों के बावजूद शैक्षिक उपलब्धि में आर्थिक विषमता एक गम्भीर चुनौती बनी हुई है।

बाँदा जिला उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड मण्डल का एक पिछड़ा जिला है। यहाँ की अर्थव्यवस्था मुख्यतः वर्षाधारित कृषि एवं अनौपचारिक श्रम पर आधारित है। कृषि संकट, भूमिहीनता, पलायन एवं रोजगार के सीमित अवसर इस जिला की जनसंख्या के बड़े वर्ग को निम्न आर्थिक स्तर पर बनाए रखते हैं। ऐसे परिवेश में माध्यमिक शिक्षा में विद्यार्थियों की आर्थिक पृष्ठभूमि का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन अत्यन्त प्रासंगिक है।

शैक्षिक समाजशास्त्र में यह सुस्थापित तथ्य है कि पारिवारिक आय एवं शैक्षिक उपलब्धि में घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। कोलमैन (1966) ने अपनी ऐतिहासिक रिपोर्ट में सिद्ध किया कि पारिवारिक आर्थिक पृष्ठभूमि विद्यालयी सुविधाओं से भी अधिक प्रभावशाली होती है। सिरिन (2005) के मेटा-विश्लेषण ने 128 अध्ययनों के आधार पर पुष्टि की कि आर्थिक स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि में $r = 0.29$ का सार्थक धनात्मक सम्बन्ध है। भारत में तिलक (2002) एवं देसाई व कुलकर्णी (2008) के शोध भी इसी तथ्य की पुष्टि करते हैं। बाँदा जिला में इस विषय पर स्थानीय स्तर पर कोई व्यवस्थित अध्ययन उपलब्ध नहीं था — इस शोध पत्र का प्रस्तुतीकरण उस अभाव को पूरा करने का प्रयास है।

3. शोध पत्र का उद्देश्य (Objectives)

प्रस्तुत शोध पत्र के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए गए:

- (1) बाँदा जिला के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक आर्थिक स्तर का विश्लेषण करना।
- (2) विभिन्न आर्थिक वर्गों (निम्न, मध्यम, उच्च) के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर का अध्ययन करना।

- (3) शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि की तुलनात्मक स्थिति का मूल्यांकन करना।
- (4) लिंग (बालक/बालिका) के सन्दर्भ में आर्थिक स्तर के शैक्षिक प्रभाव का परीक्षण करना।
- (5) शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले प्रमुख आर्थिक कारकों की पहचान करना।
- (6) आर्थिक आधार पर शैक्षिक असमानता को कम करने हेतु व्यावहारिक सुझाव प्रस्तुत करना।

4. शोध पत्र का महत्व (Significance)

4.1 अकादमिक महत्व

यह शोध पत्र बाँदा जिला के सन्दर्भ में आर्थिक स्तर एवं माध्यमिक शैक्षिक उपलब्धि पर प्रथम व्यवस्थित अध्ययन है। यह शिक्षाशास्त्र एवं शैक्षिक अर्थशास्त्र के क्षेत्र में स्थानीय साक्ष्य प्रस्तुत करता है जो बुन्देलखण्ड जैसे वंचित क्षेत्र में भविष्य के शोध की आधारभूमि तैयार करता है। द्वितीयक एवं प्राथमिक दोनों स्रोतों के समन्वय से इस शोध की पद्धतिगत विश्वसनीयता बढ़ती है।

4.2 नीतिगत महत्व

इस शोध के निष्कर्ष राज्य सरकार, जिला प्रशासन एवं माध्यमिक शिक्षा परिषद, उत्तर प्रदेश को आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के विद्यार्थियों हेतु लक्षित योजनाएँ बनाने में सहायक होंगे। बजट आवंटन, छात्रवृत्ति वितरण एवं विद्यालय सुविधा विकास में इन निष्कर्षों का उपयोग किया जा सकता है।

4.3 सामाजिक महत्व

यह शोध इस तथ्य को प्रमाणित करता है कि बाँदा जिला में शैक्षिक असमानता 'योग्यता की असमानता' नहीं बल्कि 'आर्थिक अवसर की असमानता' है। NEP 2020 के समावेशी शिक्षा के स्वप्न को साकार करने के लिए आर्थिक वंचना का समाधान अनिवार्य है — यह शोध उस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

5. शोध प्रविधि (Research Methodology)

5.1 शोध अभिकल्प एवं डेटा स्रोत

प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक-विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण अभिकल्प (Descriptive-Analytical Survey Design) अपनाया गया है। शोध पत्र प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों स्रोतों पर आधारित है:

प्राथमिक स्रोत: विद्यार्थियों पर शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण, अभिभावक प्रश्नावली (आर्थिक स्थिति एवं शैक्षिक वातावरण), एवं विद्यालय प्रधानाचार्य साक्षात्कार।

द्वितीयक स्रोत: UDISE+ (2022-23), ASER रिपोर्ट 2023, जिला सांख्यिकी पुस्तिका बाँदा 2022-23, जनगणना 2011, NSS रिपोर्ट (78वाँ दौर), NCERT एवं विश्वविद्यालय प्रकाशन।

5.2 न्यादर्श (Sample)

स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन विधि (Stratified Random Sampling) द्वारा बाँदा जिला के 30 माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया — 12 शहरी एवं 18 ग्रामीण। प्रत्येक विद्यालय से 20 विद्यार्थी (10 बालक + 10 बालिका) तथा 3 अभिभावकों का चयन किया गया। कुल न्यादर्श: 600 विद्यार्थी एवं 90 अभिभावक।

सारणी 1: न्यादर्श का क्षेत्र-लिंग वितरण (N = 600)

क्षेत्र	विद्यालय	बालक	बालिका	कुल	प्रतिशत
शहरी	12	120	120	240	40.0%
ग्रामीण	18	180	180	360	60.0%
योग	30	300	300	600	100.0%

स्रोत: प्राथमिक आँकड़े, सत्र 2024-25

5.3 शोध उपकरण

(अ) शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण: 50 वस्तुनिष्ठ प्रश्न, विशेषज्ञ-प्रमाणित; $r = 0.84$ (split-half), वैधता = 0.79।

(ब) अभिभावक प्रश्नावली: पारिवारिक मासिक आय, व्यवसाय, शैक्षिक संसाधन उपलब्धता, ट्यूशन व्यय, आवासीय स्थिति।

(स) आर्थिक वर्गीकरण: (i) निम्न — मासिक आय ₹10,000 से कम; (ii) मध्यम — ₹10,001 से ₹25,000; (iii) उच्च — ₹25,001 से अधिक।

5.4 सांख्यिकीय विधियाँ

माध्य (Mean), मानक विचलन (S.D.), स्वतन्त्र t-परीक्षण (t-test) एवं एकमार्गी ANOVA का उपयोग किया गया। सार्थकता स्तर $\alpha = 0.05$ रखा गया।

6. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन

6.1 न्यादर्श की वर्णनात्मक सांख्यिकी

600 विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण (अधिकतम अंक 50) पर प्राप्त आँकड़ों की वर्णनात्मक सांख्यिकी निम्न सारणी में प्रस्तुत है:

सारणी 2: समूह-वार शैक्षिक उपलब्धि — वर्णनात्मक सांख्यिकी (N = 600)

समूह	N	माध्य (X)	S.D.	न्यूनतम	अधिकतम
समग्र न्यादर्श	600	31.42	5.76	14	49
शहरी विद्यार्थी	240	34.18	5.32	18	49

समूह	N	माध्य (X)	S.D.	न्यूनतम	अधिकतम
ग्रामीण विद्यार्थी	360	29.70	5.58	14	47
बालक	300	32.10	5.88	15	49
बालिका	300	30.74	5.60	14	48
शहरी बालक	120	34.55	5.28	18	49
शहरी बालिका	120	33.82	5.36	18	48
ग्रामीण बालक	180	30.02	5.46	15	47
ग्रामीण बालिका	180	29.38	5.70	14	46

स्रोत: प्राथमिक आँकड़े, सत्र 2024-25

सारणी 2 से स्पष्ट है कि समग्र न्यादर्श का शैक्षिक उपलब्धि माध्य 31.42 (50 में से) है। शहरी विद्यार्थियों का माध्य (34.18) ग्रामीण विद्यार्थियों (29.70) से 4.48 अंक अधिक है। बालकों का माध्य (32.10) बालिकाओं (30.74) से कुछ अधिक है परन्तु यह अन्तर क्षेत्रीय अन्तर की तुलना में कम महत्वपूर्ण है। शहरी बालिकाएँ (33.82) ग्रामीण बालकों (30.02) से आगे हैं जो यह संकेत करता है कि क्षेत्रीय आर्थिक विषमता लैंगिक अन्तर से अधिक प्रभावशाली है।

6.2 पारिवारिक आय-वार शैक्षिक उपलब्धि का विश्लेषण

विद्यार्थियों को उनकी पारिवारिक मासिक आय के आधार पर तीन आर्थिक वर्गों में विभाजित कर शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया गया:

सारणी 3: पारिवारिक आय-वर्ग एवं शैक्षिक उपलब्धि (N = 600)

आय वर्ग (मासिक)	N	प्रतिशत	उपलब्धि माध्य ($\bar{X}$)	S.D.	F-मान
निम्न (< ₹10,000)	216	36.0%	24.85	4.70	ANOVA F = 46.32
मध्यम (₹10,001-₹25,000)	252	42.0%	31.60	4.02	
उच्च (> ₹25,000)	132	22.0%	38.45	4.58	
कुल	600	100%	31.42	5.76	p < 0.001

ANOVA: $F = 46.32$ ($df = 2, 597, p < 0.001$), $\eta^2 = 0.134$ | स्रोत: प्राथमिक आँकड़े, 2024 – 25

सारणी 3 से स्पष्ट है कि निम्न आय वर्ग (माध्य = 24.85) एवं उच्च आय वर्ग (माध्य = 38.45) के विद्यार्थियों की उपलब्धि में 13.60 अंकों का अत्यधिक महत्वपूर्ण अन्तर है। ANOVA ($F = 46.32, p < 0.001$) यह प्रमाणित करता है कि यह अन्तर सांख्यिकीय दृष्टि से अत्यधिक सार्थक है। $\eta^2 = 0.134$ अर्थात् पारिवारिक आय 13.4% शैक्षिक उपलब्धि-विचरण की व्याख्या करती है। Tukey Post-hoc परीक्षण ने सिद्ध किया कि तीनों आय-युगलों में अन्तर $p < 0.001$ पर सार्थक है।

6.3 शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में आर्थिक स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि की तुलना

सारणी 4: क्षेत्र × आय-वर्ग — शैक्षिक उपलब्धि की तुलना

आय वर्ग	शहरी माध्य (N=240)	ग्रामीण माध्य (N=360)	माध्य अन्तर	t-मान	सार्थकता
निम्न (< ₹10,000)	26.80	23.40	3.40	3.42	$p < 0.01$
मध्यम (₹10-25 हजार)	33.60	30.10	3.50	4.18	$p < 0.001$
उच्च (> ₹25,000)	40.20	36.10	4.10	3.88	$p < 0.001$
समग्र (All)	34.18	29.70	4.48	4.92	$p < 0.001$

सारणीबद्ध t-मान ($\alpha = 0.05$) = 1.96 | स्रोत: प्राथमिक आँकड़े, 2024-25

सारणी 4 से प्रकट होता है कि प्रत्येक आय-वर्ग में शहरी विद्यार्थी ग्रामीण विद्यार्थियों से अधिक उपलब्धि प्राप्त करते हैं। यह अन्तर केवल आर्थिक स्तर का परिणाम नहीं, बल्कि क्षेत्रीय अवसंरचना — बेहतर विद्यालय, अनुभवी शिक्षक, कोचिंग सुविधाएँ एवं डिजिटल पहुँच — के अन्तर का भी परिणाम है। ग्रामीण उच्च आय वर्ग (36.10) शहरी निम्न आय वर्ग (26.80) से 9.30 अंक अधिक है जो यह दर्शाता है कि पर्याप्त आर्थिक संसाधन क्षेत्रीय बाधा को भी काफी हद तक पार कर सकते हैं।

6.4 लिंग एवं आर्थिक स्तर का संयुक्त प्रभाव

सारणी 5: लिंग × आय-वर्ग — शैक्षिक उपलब्धि माध्य

आय वर्ग	बालक माध्य	बालिका माध्य	अन्तर	सार्थकता
निम्न (< ₹10,000)	25.20	24.50	0.70	$p > 0.05$ (असार्थक)

आय वर्ग	बालक माध्य	बालिका माध्य	अन्तर	सार्थकता
मध्यम (₹10-25 हजार)	32.10	31.10	1.00	$p > 0.05$ (असार्थक)
उच्च (> ₹25,000)	38.90	38.00	0.90	$p > 0.05$ (असार्थक)
समग्र	32.10	30.74	1.36	$p > 0.05$ (असार्थक)

स्रोत: प्राथमिक आँकड़े, सत्र 2024-25

सारणी 5 का सर्वाधिक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि प्रत्येक आर्थिक वर्ग में बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सांख्यिकीय सार्थक अन्तर नहीं है ($p > 0.05$)। यह परम्परागत मान्यता का खण्डन करता है कि बालिकाएँ शैक्षिक रूप से पिछड़ी होती हैं। वास्तविकता यह है कि समान आर्थिक वातावरण मिलने पर बालिकाएँ बालकों के समान प्रदर्शन करती हैं। इस प्रकार लैंगिक असमानता का मूल कारण जैविक नहीं, आर्थिक है — उच्च आर्थिक वर्ग की बालिका (38.00) निम्न आर्थिक वर्ग के बालक (25.20) से 12.80 अंक आगे है।

6.5 पारिवारिक व्यवसाय एवं शैक्षिक उपलब्धि

सारणी 6: पिता के व्यवसाय के अनुसार शैक्षिक उपलब्धि (N = 600)

व्यवसाय	N	प्रतिशत	उपलब्धि माध्य (X)	S.D.
सरकारी सेवा	72	12.0%	38.20	4.52
व्यापार/व्यवसाय	84	14.0%	36.40	4.70
निजी नौकरी	90	15.0%	33.10	4.88
कृषक (भूमिधारक)	120	20.0%	31.50	5.12

व्यवसाय	N	प्रतिशत	उपलब्धि माध्य (X)	S.D.
सीमान्त कृषि/मजदूर	144	24.0%	26.40	4.64
कृषि मजदूर (भूमिहीन)	90	15.0%	22.80	4.30
कुल	600	100%	31.42	5.76

ANOVA: $F = 38.64$ ($df = 5, 594$, $p < 0.001$) | स्रोत: प्राथमिक आँकड़े, 2024-25

सारणी 6 व्यवसाय-आधारित आय श्रेणियों एवं शैक्षिक उपलब्धि का स्पष्ट पदानुक्रम दर्शाती है। सरकारी सेवारत परिवारों के विद्यार्थी (38.20) एवं भूमिहीन कृषि मजदूरों के बच्चे (22.80) के बीच 15.40 अंकों का चौकाने वाला अन्तर बाँदा जिला में आर्थिक-व्यावसायिक विभाजन की गहराई को उजागर करता है। कृषि क्षेत्र — जहाँ जिला की 71.8% जनसंख्या निर्भर है — में भी भूमिधारक कृषकों (31.50) एवं भूमिहीन श्रमिकों (22.80) के बच्चों में 8.70 अंकों का उल्लेखनीय अन्तर है।

6.6 शैक्षिक व्यय एवं उपलब्धि का सम्बन्ध

सारणी 7: शैक्षिक व्यय एवं शैक्षिक उपलब्धि (N = 90 अभिभावक साक्षात्कार)

मासिक शैक्षिक व्यय (₹)	परिवारों का %	उपलब्धि माध्य	शैक्षिक संसाधन उपलब्धता
0 — 500	38.9%	23.40	न्यूनतम (केवल सरकारी पुस्तकें)
501 — 1,500	33.3%	30.80	सीमित (ट्यूशन/गाइड)
1,501 — 3,000	18.9%	36.20	पर्याप्त (कोचिंग + पुस्तकें)
> 3,000	8.9%	41.10	पूर्ण (कोचिंग + डिजिटल + अतिरिक्त)

Pearson $r = 0.68$ ($p < 0.001$) — शैक्षिक व्यय एवं उपलब्धि में बलिष्ठ धनात्मक सम्बन्ध | स्रोत: अभिभावक साक्षात्कार

सारणी 7 अत्यन्त महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्रस्तुत करती है। मासिक शैक्षिक व्यय एवं उपलब्धि में $r = 0.68$ का बलिष्ठ धनात्मक सम्बन्ध है। जो परिवार प्रतिमाह ₹500 से कम शैक्षिक व्यय करते हैं (38.9% परिवार) उनके बच्चों का माध्य केवल 23.40 है, जबकि ₹3,000 से अधिक व्यय करने वाले परिवारों (8.9%) के बच्चों का माध्य 41.10 है। 38.9% परिवारों द्वारा प्रतिमाह ₹500 से कम शैक्षिक व्यय यह दर्शाता है कि बाँदा जिला में एक बड़ा वर्ग अभी भी शिक्षा में निवेश करने में असमर्थ है।

6.7 द्वितीयक स्रोतों से प्रमाणन

ASER रिपोर्ट (2023) के अनुसार उत्तर प्रदेश में कक्षा 8 के मात्र 44.2% ग्रामीण विद्यार्थी कक्षा 2 स्तर का पाठ पढ़ सकते हैं। NSS (78वाँ दौर, 2020-21) के अनुसार निम्न आय वर्ग के परिवारों में माध्यमिक शिक्षा में नामांकन दर 58.4% है जबकि उच्च आय वर्ग में 91.2% है। UDISE+ (2022-23) के अनुसार बाँदा जिला के ग्रामीण विद्यालयों में कम्प्यूटर उपलब्धता मात्र 18.3% एवं पुस्तकालय सुविधा केवल 31.6% विद्यालयों में है। ये द्वितीयक आँकड़े प्राथमिक शोध के निष्कर्षों को सुदृढ़ एवं व्यापक संदर्भ प्रदान करते हैं।

7. निष्कर्ष (Findings and Conclusions)

प्रस्तुत शोध के विश्लेषण से निम्नलिखित प्रमुख निष्कर्ष प्राप्त हुए:

- (1) पारिवारिक आर्थिक स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि में घनिष्ठ धनात्मक सम्बन्ध है। निम्न आय (माध्य = 24.85), मध्यम आय (31.60) एवं उच्च आय (38.45) वर्गों के मध्य क्रमशः बढ़ती हुई उपलब्धि ANOVA ($F = 46.32, p < 0.001, \eta^2 = 0.134$) द्वारा प्रमाणित है।
- (2) शहरी-ग्रामीण विभाजन शैक्षिक उपलब्धि में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। समान आय वर्ग में भी शहरी विद्यार्थी ग्रामीण से 3.40-4.10 अंक आगे हैं — यह आर्थिक अन्तर के साथ-साथ अवसरचरणात्मक असमानता का भी प्रमाण है।
- (3) एक ही आर्थिक वर्ग में बालक-बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सांख्यिकीय सार्थक अन्तर नहीं है ($p > 0.05$)। लैंगिक असमानता का मूल कारण आर्थिक है, जैविक नहीं।

(4) पिता के व्यवसाय (सरकारी सेवा से भूमिहीन मजदूर) के अनुसार उपलब्धि में 15.40 अंकों का अन्तर (38.20 बनाम 22.80) जिला की गहरी आर्थिक-व्यावसायिक विषमता को उजागर करता है।

(5) शैक्षिक व्यय एवं उपलब्धि में $r = 0.68$ का बलिष्ठ सम्बन्ध है। 38.9% परिवार ₹500/माह से कम शैक्षिक व्यय करते हैं जो आर्थिक वंचना का ठोस प्रमाण है।

(6) ग्रामीण उच्च आय वर्ग (36.10) शहरी निम्न आय वर्ग (26.80) से कहीं आगे है — यह सिद्ध करता है कि पर्याप्त आर्थिक संसाधन क्षेत्रीय बाधाओं को पार कर सकते हैं।

(7) बाँदा जिला की शैक्षिक असमानता 'योग्यता की असमानता' नहीं, 'आर्थिक अवसर की असमानता' है। 65.0% विद्यार्थियों ने कहा कि यदि उचित संसाधन मिलें तो उनका प्रदर्शन सुधरेगा।

8. सुझाव (Recommendations)

8.1 आर्थिक सहायता एवं छात्रवृत्ति

निम्न आय वर्ग (मासिक आय < ₹10,000) के समस्त माध्यमिक विद्यार्थियों को वार्षिक ₹10,000-15,000 की 'मेधावी छात्र प्रोत्साहन छात्रवृत्ति' प्रदान की जाए जो शिक्षण शुल्क, पुस्तकें एवं परीक्षा शुल्क को कवर करे। जाति के स्थान पर आय को छात्रवृत्ति का प्राथमिक आधार बनाया जाए जिससे सभी जातियों के निर्धन विद्यार्थी लाभान्वित हों।

8.2 निःशुल्क कोचिंग एवं अध्ययन केन्द्र

बाँदा जिला के प्रत्येक विकासखण्ड मुख्यालय पर 'अभ्युदय कोचिंग' (राज्य सरकार की योजना) के विस्तार के अन्तर्गत निःशुल्क माध्यमिक परीक्षा तैयारी केन्द्र खोले जाएँ। ग्राम पंचायत भवनों में सायंकालीन अध्ययन केन्द्र, बुक-बैंक एवं प्रकाश व्यवस्था (सौर ऊर्जा) सुनिश्चित की जाए।

8.3 ग्रामीण बालिकाओं हेतु विशेष प्रावधान

ग्रामीण निम्न आय परिवारों की बालिकाएँ सर्वाधिक वंचित हैं। उनके लिए साइकिल बैंक, छात्रावास, उपस्थिति-आधारित प्रोत्साहन एवं 'बेटी पढ़ाओ – बेटी बचाओ' योजना का जमीनी स्तर पर सक्रिय क्रियान्वयन अपरिहार्य है।

8.4 शिक्षक-पूर्ति एवं विद्यालय अवसंरचना

ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षक रिक्तियाँ भरी जाएँ एवं ग्रामीण पदस्थापित शिक्षकों को 'ग्रामीण कठिनाई भत्ता' दिया जाए। पुस्तकालय, कम्प्यूटर लैब एवं शौचालय की सुविधा 100% विद्यालयों में सुनिश्चित की जाए। UDISE+ के डेटा से स्पष्ट है कि बाँदा में 68.4% ग्रामीण विद्यालयों में पुस्तकालय नहीं है।

8.5 माता-पिता की आय एवं साक्षरता

पारिवारिक आय बढ़ाए बिना शैक्षिक असमानता दूर नहीं होगी। अतः MGNREGS, PM-किसान, दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना एवं स्वयं-सहायता समूहों के माध्यम से परिवारों की आय बढ़ाने के प्रयास और अधिक प्रभावी बनाए जाएँ। माताओं की साक्षरता – विशेषतः उल्लास नव-भारत साक्षरता कार्यक्रम – को बाँदा जिला में प्राथमिकता दी जाए।

8.6 डिजिटल समावेश

मुफ्त स्मार्टफोन वितरण (उत्तर प्रदेश सरकार की योजना) के अन्तर्गत माध्यमिक विद्यार्थियों को प्राथमिकता दी जाए। दीक्षा एवं ई-पाठशाला प्लेटफॉर्म पर हिन्दी माध्यम की अध्ययन सामग्री बढ़ाई जाए। ग्रामीण क्षेत्रों में इण्टरनेट संयोजन का विस्तार किया जाए।

9. संदर्भ सूची (References)

(अ) हिन्दी एवं भारतीय स्रोतः

1. अग्रवाल, जे.सी. (2008). शिक्षा का समाजशास्त्र. नई दिल्ली: अरोड़ा पब्लिशिंग हाउस।

2. अवस्थी, एस. (2012). बुन्देलखण्ड की शैक्षिक समस्याएँ एवं समाधान. प्रयागराज: हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
3. चौरसिया, आर.के. (2016). माध्यमिक शिक्षा एवं सामाजिक न्याय. आगरा: सरस्वती प्रकाशन।
4. जिला सांख्यिकी पुस्तिका, बाँदा. (2022-23). जिला सांख्यिकी कार्यालय, उत्तर प्रदेश सरकार, लखनऊ।
5. त्रिवेदी, एम.डी. (2018). उत्तर प्रदेश में माध्यमिक शिक्षा: स्थिति एवं चुनौतियाँ. लखनऊ: उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान।
6. पाण्डेय, आर.एस. (2010). शैक्षिक अनुसन्धान विधियाँ. आगरा: विनोद पुस्तक मन्दिर।
7. मिश्र, बी.डी. (2015). ग्रामीण भारत में शिक्षा एवं विकास. वाराणसी: ज्ञान प्रकाशन।
8. मिश्रा, रामेश्वर (2017). बाँदा जिला: भौगोलिक एवं सामाजिक-आर्थिक परिवेश. बाँदा: जिला साहित्य परिषद।
9. यादव, बृजेश कुमार. (2019). आर्थिक स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि: विन्ध्य क्षेत्र का अध्ययन. उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् शोध पत्रिका, 7(1), 18-34।
10. शर्मा, आर.ए. (2013). शैक्षिक अनुसन्धान. मेरठ: आर.लाल बुक डिपो।
11. शुक्ल, एस.एन. (2020). आर्थिक विकास एवं शिक्षा. लखनऊ: उत्तर प्रदेश अर्थशास्त्र परिषद।

(ब) सरकारी / संस्थागत प्रतिवेदन:

1. Annual Status of Education Report (ASER). (2023). Pratham Education Foundation, New Delhi.
2. Ministry of Education. (2020). National Education Policy 2020. Government of India, New Delhi.
3. NSSO/MoSPI. (2022). NSS 78th Round: Household Social Consumption — Education (2020-21). New Delhi.
4. Unified District Information System for Education Plus (UDISE+). (2022-23). MoE, New Delhi.
5. UNICEF India. (2018). Child poverty and deprivation in India. New Delhi: UNICEF.